धार्मिक सह-अस्तित्व और सूफ़ीवाद

(विशेष संदर्भ : बहराइच शरीफ़)

महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा

अहिंसा एवं शाँति अध्ययन के अन्तर्गत एम. फिल. शोध उपाधि

के लिए प्रस्तुत लघु-शोध प्रबन्ध

सत्र: 2012 - 13

शोध-निर्देशक :

डा. डी. एन. प्रसाद

(असिस्टेंट प्रोफेसर)

शोध छात्रा :

हुस्न तबस्सुम

एम.फिल., अहिंसा एवं शाँति अध्ययन

नामांकन संख्या : 2012/03/210/005

अहिंसा एवं शाँति अध्ययन विभाग

संस्कृति विद्यापीठ

महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

गाँधी हिल्स, वर्धा- 442005 (महाराष्ट्र)

प्रस्तावना

इतिहास के गर्भ में अधिकतर चीजें, घटनाएं इत्यादि बड़े स्तर पर समाहित रहती हैं, जो हमारी दृष्टि से प्रायः लुप्तप्राय होती हैं। यदि समाज को प्रगतिशीलता से जोड़ना है, तो हमें ऐसी विलुप्त-प्रघटकों का भी अध्ययन करना होगा। क्योंकि बिगत के आधार पर ही आगत को 'सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम्' की वैचारिक-आस्था से जोड़ा जा सकता है।

वास्तव में जो विलुप्त हो चुकी होती है या हो रही है, वही हमारी मूल सभ्यता व संस्कृति होती है। यहाँ तक कि उसी कैनवास पर हम प्रगतिशीलता रचते हैं, किन्तु बाद में हम प्रगतिशीलता के दास बन कर रह जाते हैं और उन सभ्यताओं व संस्कृतियों को हम पीछे छोड़ देते हैं। आसान भाषा में, यह आदमी की निगाह में उपेक्षित ही रह जाती है।

इन्हीं और ऐसी ही उपेक्षित चीजों को मुख्य धारा में लाने का प्रयास ही शोध है। भारत में तमाम ऐसी चीजें व स्थान हैं, जो अब नाम मात्र भी नहीं रह गए हैं। चाहे ऐतिहासिक स्थल हों, सभ्यताएं हों, जनजातियाँ हों वगैरह-वगैरह। हालांकि किसी देश की यही मूल संस्कृति होती है। इन्हें तलाशने व तराशने की आवश्यकता है और यह कार्य शोध द्वारा ही अंजाम दिया जा सकता है। इसीलिए शोध एक जरूरी प्रक्रिया है, किसी चीज को स्थापित करने के लिए।

इस श्रृंखला में बहराइच की भी गणना की जा सकती है। ऐसा स्थान जो कभी सभ्यता व संस्कृति से बहुत ही समृद्ध था। इसका अपना इतिहास था। वो चाहे हिन्दू से लेकर मुगल शासकों तक का दौर हो या अंग्रजी शासन का

वर्चस्व हो अथवा जन-जातियों की उपस्थिति हो। वेदों-पुराणों में अपनी उपस्थिति दर्ज कराने वाला बहराइच आज आधुनिक भारत में अपनी पहचान से वंचित है। यद्यपि अन्य देशों में इसकी यदा-क़दा न सिर्फ चर्चा होती रहती है, बल्कि इसे पूर्ण सम्मान भी मिलता है।

बहराइच को अपना खोया हुआ गौरव पुन: प्राप्त हो सके, यही मेरे शोध का उद्देश्य है।

पर्यटन स्थल के रूप में

पर्यटन स्थल के रूप में बहराइच की अपूर्व ख्याति है। यहाँ तक कि विदेशी पर्यटक भी यहाँ भारी संख्या में आते हैं, जिससे पर्यटन विभाग को काफी लाभ होता है। इसके बावजूद भी बहराइच को वैष्विक-फलक पर सुसज्जित करने का प्रयास बिल्कुल नहीं किया जा रहा है। यद्यपि ऐतिहासिक व पौराणिक परिदृश्य पर इसका विशेष स्थान रहा है। यहाँ विभिन्न ऐतिहासिक स्थल देखे जा सकते हैं।

नेपाल सीमा से लगे होने के कारण महत्व और भी बढ़ जाता है। यहाँ तक कि यहाँ से नेपाल और भारत के व्यापारिक-सम्बन्ध भी सुदृढ़ होते रहे हैं। नेपाल व भारत के रिष्ते अत्यंत मधुर हैं। बहराइच (भारत) में होने वाले प्रायः सभी सांस्कृतिक व सामाजिक कार्यक्रमों में नेपाल के लोग आकर बड़ी सहजता व आत्मीयता से शिरकत करते हैं। इसी प्रकार भारतीय लोग भी बड़ी ही सहजता से नेपाल में होने वाले कार्यक्रमों में भाग लेने पहुंचते रहते हैं। कैलाशपुरी, गिरिजापुरी, चित्तौरा आदि यहाँ के दर्षनीय स्थल हैं, जहाँ पर्यटकों का जमघट लगा रहता है। यह भीड़ नववर्ष के अवसर पर अधिक

बढ़ जाती है। इनमें अधिकतर लोग विदेश से आए हुए होते हैं। यहाँ इनके ठहरने व खाने-पीने का मुकम्मल इंतजाम पर्यटन विभाग की ओर से किया जाता है। धर्मशालाएं व होटल इनके ठहरने के लिए स्थापित किए गए हैं।

मैंने अपने शोध-प्रबन्ध को पूर्ण करने के लिए इसे पाँच अध्यायों में विभक्त किया है।

1.तपोभूमि बहराइच की इतिहास में प्रासंगिकता व अवशेष –

प्रथम अध्याय बहराइच के ऐतिहासिक प्रसंग से पूर्व का है। इस अध्याय में बहराइच के उद्भव-विकास तथा वहाँ घटने वाली विभिन्न ऐतिहासिक घटनाओं की विस्तृत चर्चा की गई है तथा बहराइच की संस्कृति, सामाजिक ढ़ाचा तथा उसके स्वरूप की व्याख्या की गई है। ऐतिहासिक उत्कर्ष के साथ ही इसकी समृद्ध-सम्पदा का भी व्यौरा दिया गया है। आदिकालीन, महाभारत कालीन, रामायण कालीन, मुगल कालीन उत्कर्ष, बौद्ध कालीन चरमोत्कर्ष आदि का विस्तारपूर्वक व्यौरा दिया गया है और इसके अवशेषों को भी प्रासंगिक किया गया है।

2.धार्मिक सह-अस्तित्व की अवधारणा और बहराईच शरीफ़-

द्वितीय अध्याय सह-अस्तित्व के दर्शन को स्पष्ट करता है। इस अध्याय में धार्मिक सह-अस्तित्व की अवधारणा पर विशेष तौर से प्रकाश डाला गया है। साथ ही बहराइच से सम्बद्ध विभिन्न प्रश्नों का उत्तर भी समावेशित किया गया है। जैसे कि बहराइच का नाम बहराइच शरीफ़ क्यों पड़ा, शरीफ़ का क्या आशय है, धार्मिक सह-अस्तित्व की अवधारणा कितनी प्रासंगिक है और इसका क्या प्रभाव है इत्यादि। तत्पश्चात् बहराइच के ऐतिहासिक-अस्तित्व पर चर्चा करते हुए सैयद सालार मसूद गाज़ी, राजा सुहेलदेव व बालार्क ऋषि को संदर्भ में लाते हुए बहराइच की सह-अस्तित्व की अवधारणा को सिद्ध करने का प्रयास किया गया है।

3.सूफ़ी, सूफ़ीवाद और बहराइच-शरीफ़-

तीसरा अध्याय सुफ़ियाना की सहोदरता से परिपुष्ट है।शोध-प्रबन्ध के इस अध्याय में सूफ़ी व सूफ़ीवाद पर गहन चर्चा की गई है। सूफ़ी शब्द की व्युत्पत्ति के साथ-साथ सूफ़ी मतों तथा सूफ़ी सम्प्रदायों का लेखा-जोखा प्रस्तुत करते हुए बहराइच में सन्निहित सूफ़ीवाद को सम्बद्ध किया है। इसके अन्तर्गत बहराइच में हुए सूफ़ियों के बारे में विस्तृत चर्चा की गई तथा समाज में उनके आध्यात्मिक योगदान का भी प्रभाव दर्शाया गया है, जिसके कारण बहराइच को शरीफ़ से अलंकृत किया गया।

4.धार्मिक सह-अस्त्वि और सूफ़ीवाद का समन्वयात्मक तत्व-

इस अध्याय में सह-अस्तित्व तथा सूफ़ीवाद के बीच आपसी सह-सम्बन्ध की विस्तार पूर्वक चर्चा की गई है। इसके सिवाय तीनों अवधारणाओं का अलग-अलग विश्लेषण कर उनके आशय को सुगमता पूर्वक व्याख्यायित किया गया है।

5.सामाजिक सौहार्द के परिपे्रक्ष्य में बहराइच-शरीफ़ का कैनवास-

सामाजिक सौहार्द के परिप्रेक्ष्य में बहराइच शरीफ़ का क्या महत्व है, इस अध्याय में बताया गया है। इसमें ऐसे तमाम बिन्दुओं की विस्तृत चर्चा की गई है, जो बहराइच में सामाजिक सौहार्द की भावना विकसित करते हैं तथा आपसी भाई-चारे का सन्देश देते हैं। बहराइच में ऐसे तमाम स्थान व सन्त हैं जो बहराइच को एकता के सूत्र में बांधते हुए सत्य-अहिंसा और धर्म का सन्देश देते हैं। इसमें ईसाइ चर्च एवं मिशनरी, मिल्ली सोसाइटी, चन्द्र प्रभु चैत्यात्य, गुरूद्वारा कमेटी, आर्य समाज आदि का विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है।

इस प्रकार इन पाँचों अध्यायों में बहराइच व बहराइच में सूफ़ीवाद की प्रासंगिकता पर भरपूर प्रकाश डाला गया है। इससे बहराइच की सामाजिक, भौगोलिक संरचना, सांस्कृतिक व धार्मिक परिवेश तथा ऐतिहासिक प्रसंग पूर्णतः सम्मुख आ जाते हैं, जिससे बहराइच या बहराइच शरीफ़ के महत्व को

सरलता व गहनता से समझा जा सकता है, जो इस शोध का मुख्य ध्येय भी है।

इस शोध-प्रबन्ध को पूरा कराने में हमारे शोध-निर्देशक डा0डी0 एन0 प्रसाद सर का विशेष सहयोग रहा, जिनके मार्ग- दर्शन के बिना यह कार्य पूर्ण करना मेरे लिए सम्भव नहीं था। मैं हृदय से उनकी आभारी हूँ।

प्रो0 राकेश मिश्र सर की मैं तहे-दिल से शुक्रगुजार हूँ, जिन्होंने मेरे इस शोध-प्रबन्ध को पूरा कराने में विशेष भूमिका निभाई। उन्होंने कई सूक्ष्म व जटिल समस्याओं से न सिर्फ मुझे आगाह किया, बल्कि उनका समाधान भी किया।

चूंकि मेरा कार्य-क्षेत्र बहराइच है, इसलिए बगैर बहराइच के लोगों के सहयोग के यह कार्य अधूरा ही रहता। विषय से सम्बन्धित आंकड़े (डाटा) एकत्र करने में मुख्य रूप से शायर फ़ौक बहराइची व पूर्व प्रधानाचार्य श्री शत्रुघ्न लाल श्रीवास्तव जी का बहुत योगदान रहा। इनका भी मैं हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ।

हुस्न तबस्सुम
छात्रा: एम.फिल.
अहिंसा एवं शांति अध्ययन
सत्र: 2012-13
अहिंसा एवं शांति अध्ययन विभाग
संस्कृति विद्यापीठ
महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय,
वर्धा- (महाराष्ट्र)

उपसंहार

उपसंहार

प्रस्तुत शोध का विश्लेषण करते हुए यह तथ्य स्पष्ट होता है कि उक्त स्थान-विशेष को प्रकाश में लाने के लिए एक विषय-शोध की आवश्यकता थी। जिसका प्रयास यहाँ किया है। इस शोध के प्रकाश में बहराइच को 'बहराइच शरीफ़' तक बनने की प्रक्रिया का विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है तथा साथ ही साथ सूफ़ी सम्प्रदाय के उद्भव व विकास की चर्चा की गई है। यहाँ तक कि बहराइच से सम्बन्धित सूफ़ियों के अस्तित्व पर भी प्रकाश डाला गया है और बहराइच में सूफ़ियों की स्थिति-परिस्थितियों पर भी चर्चा की गई है।

शोध का वास्तविक उद्देश्य था, इस क्षेत्र को सामाजिक फलक पर लाना, क्योंकि यह काफी अर्से से विचारकों की दृष्टि से अदृश्य ही रहा है। इसलिए इसे एक प्रकार से शोध की आवश्यकता थी। इस शोध के बाद सम्भव है, इस पर आगे भी अध्ययन हो, विचार हो, जिससे इसके महत्व व विशेषता की अपनी पहचान बनाने में सम्बल मिले।

बहराइच पर काम करने का कौतुक मेरे मन में काफी दिनों से था और मैं महसूस कर रही थी कि इस इलाके पर शोध करने की आवश्यकता है, जिससे काफी चीजें निकल कर सामने आ सकती हैं और अदृश्य, दृश्यमान हो सकते हैं। इस पर काम करके मैंने ऐसा ही महसूस किया। इस क्षेत्र में वास्तव में शोध की आवश्यकता थी। काफी ऐसी चीजें मुखर हुईं, जो बहुत ही महत्वपूर्ण थीं और विलुप्तप्राय थीं। उदाहरण के लिए जैसे विभिन्न प्रसंग, रामायण से महाभारत काल तक के महत्वपूर्ण तत्व व तमाम घटनाएं भी

सामने आईं। जैसे अंगुलीमाल वाली घटना, रामायण काल में बाल्मिकि से जुड़ी घटना, जन-जातियों से सम्बद्ध घटनाएं इत्यादि।

इसी प्रकार जब सूफ़ी-प्रसंग पर काम करना शुरू किया और दस्तावेजों व कुछ एक जीवित सूफ़ियों से सम्पर्क हुआ, तो मेरा निर्णय गलत नहीं था। पता चला कि यह धरती बड़े-बड़े सूफ़ियों व महात्माओं की धरती है। जहाँ तसव्वुफ की अविरल धारा सातो पहर प्रवाहमय रहती है। मुझे तमाम सूफ़ियों बे बारे में विस्तृत जानकारी मिली, जिनका बहराइच में आध्यात्म्य का प्रकाश फैलाने में बहुत ही योगदान रहा। इनमें से कुछ अभी भी ताह्यात है, मैंने उनसे सम्पर्क भी किया और बहराइच में आध्यात्म्य से प्रेरित विभिन्न तथ्यों की जानकारियाँ हासिल कीं, जो शोध की दृष्टि से महत्वपूर्ण थीं।

इसी प्रकार बहराइच में स्थित दरगाह का सर्वे करने से विभिन्न तथ्यों का ज्ञान हुआ। इसकी लोकप्रियता का कारण, धार्मिक सद्भाव के अप्रतिम-मंजर इत्यादि। इससे स्पष्ट होता है कि इन सब चीजों पर एक शोध की आवश्यकता थी, जो मैंने किया। मई-जून की चटख गर्मी में यहाँ उर्स तो होता ही है, लेकिन इसके अतिरिक्त भी खाली दिनों में जब मैं यहाँ गई, तो देखा कि वैसा ही मन्जर था, वैसी ही भीड़, वैसे ही सुदूर से आए हुए लोग, जो न तो हिन्दू थे और न ही मुस्लिम, ना यहूदी न ईसाई, बल्कि वे सहोदर थे। साक्षात्कार के जरिए यह भी पता चला कि इसी दरगाह की छोटी-छोटी सूरतें और भी अन्य स्थानों पर स्थापित की गई हैं। जैसे कि इन्दौर में स्थित कोई ‘महू’ स्थान है, जहाँ पर इसी दरगाह का रूप स्थापित किया गया है तथा उसका नाम भी ‘बहराइच दरगाह’ ही है। जिस समय यहाँ उर्स होता है, ठीक उसी समय वहाँ भी उर्स सम्पन्न होता है। मान्यता है कि महू के शेख बहराइच दरगाह में पुत्र प्राप्ति के लिए मुराद मांगी थी। जब उनकी मुराद पूरी

हो गई, तो उन्होंने यहाँ से एक ईंट ले जाकर वहाँ मजार स्थापित की तथा मसूद गाज़ी के नाम पर वहाँ भी उर्स होने लगा।

ज्ञात हुआ कि जिस समय राजा सुहेलदेव व मसूद गाज़ी के बीच संघर्ष हुआ। काफी संख्या में योद्धाओं ने वीरगति प्राप्त की। उन्हें शहीद का दर्जा दिया गया और बहराइच को शहीदों की जमीन होने के कारण 'बहराइच शरीफ़' के नाम से सम्बोधित किया जाने लगा। ऐसी तमाम गूढ़ बातें शोध के द्वारा ही प्रकाश में लायी जा सकती थीं। इसीलिए शोध की आवश्यकता बन रही थी, जो मैंने किया।

श्रावस्ती एक ऐतिहासिक बौद्ध स्थल है। इसको भी प्रकाश में लाने की आवश्यकता है। मैंने प्रयास किया है कि इस शोध के जरिए श्रावस्ती का वृहद-रूप सम्मुख आए तथा इसकी खोई हुई प्रतिष्ठा का पुनर्मूल्यांकन हो और पर्यटकों के साथ-साथ पर्यटन विभाग की दृष्टि उस पर पड़े और उसे अपनी प्रतिष्ठा वापस मिल सके।

इस प्रकार मैंने इस शोध द्वारा अज्ञात से ज्ञात को सामने लाने का प्रयास किया है। मुझे इस शोध-प्रबन्ध को पूर्ण करने के दौरान ऐसा महसूस हुआ है कि यह मेरा महत्वपूर्ण व सार्थक प्रयत्न था और इसका मूल्यांकन होगा तथा कई प्रकार के लाभ की भी गुन्जाईश है, जो मेरे शोध का प्रमुख तथा महत्वपूर्ण उद्देश्य था।

****